



उत्तमा वृत्तिस्तु कृषिकर्मैव

चौखी खेती

जुलाई, 2020

ई-संस्करण

कोरोना – वैश्विक महामारी : इससे डरें नहीं, सावधान रहें

वसुप्रिया पाराशर*, चारू नागर** एवं डॉ. (श्रीमती) सीमा त्यागी***

कोरोना वायरस यानि कि कोविड-19 बहुत सूक्ष्म लेकिन घातक वायरस है। चीन के वुहान शहर में 2019 से शुरू हुआ नोवल कोरोना वायरस पूरी दुनिया के साथ भारत को भी अपनी चपेट में ले चुका है। सभी लोग डरे हुए हैं। लगातार एक के बाद एक देश अपने यहाँ लॉकडाउन (एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में प्रवेश नहीं या या एक ही इमारत या एक क्षेत्र में रहना) या कर्फ्यू लगा रहे हैं ताकि इस वायरस के फैलाव को कम किया जा सके।

नोवल कोरोना वायरस विषाणुओं का एक समूह है जो स्तनधारियों और पक्षियों में रोग से उत्पन्न हुआ है। इसके फलस्वरूप सामान्य जुकाम से लेकर गम्भीर

स्वरूप को मुख्य रूप से मानवों के श्वसन तंत्र को प्रभावित कर इनमें संक्रमण पैदा करता है।

कोरोना वायरस के सामान्य लक्षण

1. तेज बुखार आना
2. कफ और सूखी खांसी
3. सांस लेने में समस्या
4. फ्लू सर्दी-जुखाम जैसे लक्षण

असामान्य लक्षण

1. सिरदर्द
2. बन्द नाक
3. गले में खरास
4. कफ के साथ खांसी
5. सांसों की गति धीमी होना
6. मांसपेशियों या जोड़ों में दर्द
7. ठण्ड लगना
8. दस्त या उल्टी

संक्रमित रोगी की गम्भीरता के लक्षण :

इस वायरस से बीमार होने पर व्यक्ति में ये लक्षण दिखाई देते हैं :-

1. तेज बुखार
2. खांसी के साथ रक्त का आना
3. श्वेत रक्त कणिकाओं में कमी
4. किडनी का खराब हो जाना
5. निमोनिया व फेफड़ों में संक्रमण

संचरण का माध्यम या कैसे फैलता है यह वायरस?

यह इन्सान से इन्सान में फैलता है, यह बात साबित हो गई है। जब एक संक्रमित व्यक्ति खांसी या लगभग 3 फीट से 6 फीट की सीमा के भीतर छींकता है तब यह

वायरस हवा के कणों के माध्यम से फैलता है।

संक्रमण की श्रेणियां

1. पहली श्रेणी में वे लोग आते हैं, जिनमें कोई लक्षण नहीं दिखता है।
2. इसमें वे लोग होते हैं जिनमें श्वसन नली के ऊपरी हिस्से में संक्रमण होता है।
3. तीसरी श्रेणी में कोविड-19 पॉजिटिव होते हैं।
4. चौथी श्रेणी के लोगों में निमोनिया जैसी बीमारी का गम्भीर स्वरूप दिखाई देता है।

सामान्य बचाव

1. व्यक्तिगत स्वच्छता और शारीरिक दूरी बनाए रखें।
2. बार-बार हाथों को अच्छी तरह धोए यां हैंड एल्कोहल युक्त सेनिटाइजर, उसका

शेष पेज 6 पर.....

अजोला की खेती

ओम प्रकाश चौधरी*, सुभाष यादव* और भागचंद यादव**

अजोला तेजी से बढ़ने वाली एक प्रकार की जलीय फर्न है, जो जल की सतह पर छोटे-छोटे समूह में सघन हरे गुच्छे की तरह तैरती रहती है। देखने में यह शैवाल से मिलती-जुलती है और आमतौर से उथले पानी में अथवा धान के खेतों में पाई जाती है। यह मुख्य रूप से प्रोटीन की अधिकता (25 प्रतिशत) के लिए जानी जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें अमीनो एसिड, विटामिन (विटामिन ए, विटामिन बी-12 तथा बीटा कैरोटीन), कैल्शियम, फॉस्फोरस, फ़ैरस, कॉपर, मैग्नेशियम भी पाया जाता है। मुख्य रूप से अजोला की प्रजाति अजोला पिन्नाटा उगाई जाती है। यह काफी हद तक गर्मी सहन करने वाली किस्म है। अजोला का उपयोग पशुओं, कुक्कुट पालन एवं मछली पालन के दौरान चारे के रूप में किया जाता है। इसकी उत्पादन लागत भी बहुत कम होती

है।

अजोला तैयार करने की विधि:

- किसी छायादार स्थान पर 2-3 मीटर लम्बी और आवश्यकतानुसार 1-1.5 मीटर चौड़ा एक फीट गहरा गड्ढा खोदकर क्यारी बनाएं ताकि दोनों तरफ से काम किया जा सके।
- क्यारी में पानी का रिसाव रोकने के लिए गड्ढे को प्लास्टिक सीट से ढक देते हैं। जहां तक संभव हो पराबैंगनी किरण रोधी प्लास्टिक सीट का उपयोग करना चाहिए।
- तैयार क्यारी में 10-15 किलोग्राम साफ उपजाऊ मिट्टी की परत बिछा दें।
- कार्बन स्रोत के लिए अजोला क्यारी में 2-4 दिन 4 से 6 किलो पुराना गोबर, 20 से 25 लीटर पानी में घोलकर डालते हैं, जो अजोला के लिए कार्बन स्रोत का कार्य करता है।
- अजोला क्यारी में

अजोला बीज डालने से पहले 40 ग्राम सूक्ष्म पोषक तत्व मिक्सर (10 किलो रॉकफॉस्फेट, 1.5 किलो मैग्नेशियम तथा 20 से 50 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश का मिश्रण) को गोबर की स्लरी में मिक्स कर देते हैं।

- अजोला क्यारी में पानी की गहराई लगभग 10-12 से.मी. कर दें।
- अजोला क्यारी में मिट्टी तथा पानी को हल्के से हिलाने के बाद लगभग 0.5 से 1 किलोग्राम अजोला इनोकूलम पानी की सतह पर एक समान फैला दी जाती है। अजोला के पौधे को सीधा करने के लिए अजोला पर ताजा पानी छिड़का जाना चाहिए।

अजोला के लाभ

- अजोला एक उत्तम जैविक खाद के रूप में कार्य करता है।
- यह धान के सिंचित खेत से वाष्पीकरण की दर को कम करता है।

● धान के खेत में अजोला छोटी-मोटी खरपतवार जैसे चारा और निटेला को दबा देता है तथा इसके उपयोग से धान की फसल में 10 से 15 प्रतिशत उत्पादन वृद्धि की जा सकती है।

- अजोला रासायनिक उर्वरकों के उपयोग की क्षमता को बढ़ाता है।
- अजोला सस्ता, सुपाच्य एवं पौष्टिक पूरक पशु आहार है।
- मुर्गियों को 30-40 ग्राम अजोला प्रतिदिन खिलाने से मुर्गियों में शारीरिक वृद्धि और अंडा उत्पादन क्षमता में 10-15 प्रतिशत वृद्धि होती है।
- दुधारू पशुओं को 1.5 से 2.5 किलो अजोला प्रतिदिन दिया जाता है, तो दुग्ध उत्पादन में 10 से 20 प्रतिशत वृद्धि की जा सकती है और दूध की गुणवत्ता भी पहले से अच्छी हो जाती है।
- भेड़ व बकरियों को शेष पृष्ठ 4 पर.....

ड्रिप सिंचाई संयंत्र की उचित देखभाल व रखरखाव

अशोक चौधरी*, पंकज कुमार कस्वां**, रमेश कुमार***, इंजी. ए.के.सिंह****

सिंचाई संयंत्र की देखभाल : आपका ड्रिप सिंचाई संयंत्र (ऑनलाइन/ इनलाइन) सुचारू रूप से चले और इसका अधिकाधिक उपयोग सालों तक हो सके, इसके लिए संयंत्र की उचित देखभाल आवश्यक है। आप चाहें तो समय सारिणी बना सकते हैं। समय सारिणी को इन हिस्सों में बांट लें—

नित्य, पाक्षिक, मासिक, द्विमासिक, अर्धवार्षिक और अन्य देखभाल

अ. नित्य देखभाल:

1. हर दिन पम्प चालू करने के बाद, संयंत्र का दबाव स्थिर होने पर सैंड फिल्टर को बैकवाशिंग करनी चाहिए तथा हाइड्रोसाइक्लॉन तथा स्क्रीन फिल्टर के ड्रेन वॉल्व खोलकर फ्लश करना चाहिए। आरंभिक सफाई के बाद हर 5-6 घंटे या पानी की गुणवत्ता के अनुसार

समय-समय पर फिल्टर्स साफ करने चाहिए। बैकवॉश पद्धति में पानी के प्रवाह के विपरीत दिशा में सैंड फिल्टर में पानी छोड़ा जाता है। इससे रेत में फंसी गंदगी विपरीत प्रवाह के

| सैंड फिल्टर बैकवॉश निम्न पद्धति से क्रमशः करना चाहिए | बैकवॉश पूर्ण होने के बाद संयंत्र पूर्ववत स्थिति में लाने के लिए— |
|--|---|
| -बैक वॉल्व खोलिए। -आउटलेट वॉल्व बंद कीजिए। -बायपास वॉल्व खोलिए। -इनलेट वॉल्व बंद कीजिए। | -इनलेट वॉल्व खोलिए। -बायपास वॉल्व बंद कीजिए। -आउटलेट वॉल्व खोलिए। -बैकवॉश वॉल्व बंद कीजिए। |

साथ ऊपर आकर बैकवॉश वॉल्व द्वारा बाहर फेंकी जाती है। बैकवॉश नहीं करने से जरूरी दबाव से पानी नहीं मिल पाता है।

सैंड फिल्टर बैकवॉश निम्न पद्धति से क्रमशः करना चाहिए बैकवॉश पूर्ण होने के बाद संयंत्र पूर्ववत स्थिति में लाने के लिए—बैक वॉल्व खोलिए।

2. फिल्टर की सफाई होने के बाद हैडर असेम्बली के बायपास वॉल्व की सहायता से उचित दाब नियंत्रित करना चाहिए। उपयुक्त दबाव पर चलने

वाले संयंत्र में पानी सभी जगह समान मात्रा में मिलता है। इसमें दबाव से नली और ड्रिपर में कचरा फंसने या पानी का प्रवाह कम होने का खतरा टाल सकते हैं।

3. खेतों में निरीक्षण

कर कहीं टूट-फूट या लिकेज होने पर तुरंत ठीक कराएं। पाइप मुड़ा हुआ या दबा हुआ हो तो तुरंत सीधा करें।

4. ड्रिप संयंत्र के सभी ड्रिपर्स से पानी ठीक तरह से गिरता है या नहीं, इसका ध्यान रखना चाहिए।

5. ड्रिप सिंचाई पूर्ण होने के बाद जमीन का गीलापन सभी जगह एक जैसा है या नहीं, यह भी देखना चाहिए।

6. ड्रिपर सही जगह लगता है, यह सुनिश्चित करें। ड्रिप सिंचाई के गीले

क्षेत्र में जड़ का विकास तेजी से होता है। ड्रिपर की जगह बार-बार बदलने से जड़ों को पर्याप्त पानी नहीं मिलता और इसका असर फसल की बढ़ोत्तरी पर होता है।

क्षारयुक्त जमीन से क्षार ड्रिपर के पानी में घुलकर जड़ के क्षेत्र से बाहर फेंके जाते हैं। ड्रिपर की जगह बार-बार बदलने से

जड़ों की पानी खींचने की क्षमता कम हो सकती है।

7. लैटरल/इनलाइन का अंतिम छोर खोलकर पानी को 1-2 मिनट यहां से बाहर निकलने दें। हर रोज एक भाग का लैटरल/इनलाइन इसी तरह साफ कर सकते हैं। लैटरल की सफाई करते समय शुरुआत में पांच-पांच लैटरल/इनलाइन की एंडकैप खोलिए, जिससे प्रवाह दर तेज होकर लैटरल ठीक प्रकार से साफ हो सके।

शेष पेज 4 पर....

* वरिष्ठ अनुसंधान अध्ययता, सह आचार्य (कृषि अभियांत्रिकी) सुनियोजित खेती विकास केन्द्र, कृषि अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर

पेज 2 का शेष

150–200 ग्राम अजोला खिलाने से शारीरिक वृद्धि व दुग्ध उत्पादन में बढ़ोत्तरी होती है।

● गाय-भैंस व भेड़-बकरियों को अजोला खिलाने से उनकी उत्पादन व प्रजनन क्षमता बढ़ जाती है।

● फॉस्फोरस की कमी से पशु के पेशाब में खून की समस्या होती है, ऐसे पशुओं को अजोला खिलाई जाए तो यह कमी दूर हो जाती है।

● अजोला वायुमंडलीय कार्बन डाई ऑक्साइड और नाइट्रोजन को क्रमशः कार्बोहाइड्रेड और अमोनिया में बदल सकता है और अपघटन के बाद फसल को नाइट्रोजन उपलब्ध करवाता है तथा मिट्टी में जैविक कार्बन उपलब्ध करवाता है।

कटाई

● प्लास्टिक की छलनी या ऐसी ट्रे जिसके निचले भाग में छेद हो, की सहायता से 15–20 दिन बाद से प्रतिदिन की जा सकती है।

● कटे हुए अजोला से गोबर की गंध हटाने के लिए

ताजे पानी से धोना चाहिए।

सावधानियां

● अजोला की अच्छी बढ़वार के लिए तापमान महत्वपूर्ण कारक है। लगभग 25–35 डिग्री सैल्सियस तापमान अच्छी बढ़वार के लिए उपयुक्त रहता है।

● शीत ऋतु में तापक्रम 8 डिग्री सैल्सियस से कम होने पर अजोला की क्यारी को पुरानी बोरी के टाट अथवा प्लास्टिक मल्व से रात्रि में ढक देना चाहिए।

● क्यारी में पानी के स्तर को 10–12 से.मी. तक बनाए रखें।

● मध्यम का पी.एच. मान 5.5 से 7 होना चाहिए।

● उपयुक्त पोषक तत्व जैसे गोबर का घोल, सूक्ष्म पोषक तत्व आवश्यकता के अनुसार डालते रहना चाहिए।

● अच्छी उपज के लिए संक्रमण से मुक्त वातावरण तथा सूर्य की पर्याप्त रोशनी वाले स्थान को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

पेज 3 का शेष

लैटरल साफ करते समय किसी एक लैटरल को फलश करने से पहले सफेद कपड़ा लपेटिए और इससे लैटरल का पानी छनकर बाहर जाने दें। कपड़े पर जमी गंदगी का निरीक्षण कर ड्रिप संयंत्र में कौनसी समस्याएं आ सकती हैं, इनका निदान किया जा सकता है। जैसे कपड़े पर कार्ब के कण दिखने से आप जान सकते हैं कि आपके संयंत्र में कार्ब है। आप तुरंत क्लोरीन प्रक्रिया कर सकते हैं अथवा सैंड फिल्टर लगा सकते हैं।

8. सबमेन का फलश वॉल्व खोलकर अंदर का कचरा साफ करने के बाद ही दूसरा सिंचाई प्रभाग चालू करें। ध्यान रखें कि संयंत्र में आने वाला कचरा हमेशा पाइपलाइन के अंतिम भाग में जाम होता है। इसे नहीं निकालने से सड़कर ड्रिपर में आ सकता है। इसके लिए सबमेन नियमित फलश करना जरूरी है।

अर्द्ध मासिक (पाक्षिक)

देखभाल:

ऊपर दर्शाए क्र.स. 1 से 8

तक के निर्देशों का पालन करने के बाद प्रत्येक पंद्रह दिनों में निम्नलिखित देखभाल करनी चाहिए—

सैंड फिल्टर—

● पानी में मौजूद क्षार के कारण अक्सर रेत की ऊपरी सतह पत्थर के समान कठोर हो जाती है। केवल बैकवॉश से उसकी सफाई नहीं होती। इसके लिए हर पंद्रह दिन में रेत को हाथ से साफ कर बैकवॉश करना जरूरी होता है।

● सैंड फिल्टर का ढक्कन खोलकर बैकवॉश चालू करने के बाद फिल्टर के अंदर हाथ से रेत को अच्छे से तोड़ना चाहिए। फिल्टर से आने वाला पानी ढक्कन से बाहर निकलने दें।

● हाथ से रेत साफ करते समय अंदर के काले रंग के फिल्टर एलिमेंटर को धक्का नहीं लगाना चाहिए। इससे रेत स्क्रीन फिल्टर में जाने की आशंका रहती है।



कद्दूवर्गीय सब्जियों को मूल्य संवर्धन

डॉ. अदिति गुप्ता*, डॉ. बलवीर सिंह* व श्री राजेन्द्र नागर*

राजस्थान में कुष्मांडकुल की सब्जियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन सब्जियों का उद्गम स्थान कहीं भी रहा हो, किंतु यह प्रमाणित है कि राजस्थान प्रदेश इनकी खेती का अनुकूलतम स्थान है। इस वर्ग की बहुत सी सब्जियों को प्रदेश की स्थानीय जातियों की जैनेटिकल गुणवत्ता की श्रेष्ठता के कारण अपनी ख्याति है।

भारत की कुल सब्जियों के किस्म सुधार कार्यक्रमों में राजस्थान के बहुत से स्थानीय जनन द्रव्य का प्रयोग किया जाता है। यहां के रोएंदार टिंडे तथा मध्यम आकार के मोटे छिलके वाले हरे करेले बहुत स्वाद होते हैं।

आर्थिक महत्त्व—

कद्दूवर्गीय सब्जियां गर्म मौसम में तैयार होने वाली सब्जियां हैं। अधिकतर

सब्जियां शरद या वर्षा ऋतु में पैदा की जाती हैं। गर्मी की ऋतु अधिकतर सब्जियों के उत्पादन के लिए अनुकूल नहीं मानी जाती हैं, जिसके कारण ग्रीष्म ऋतु में हरी सब्जियों का अभाव आ जाता है। अतः अभाव के इन दिनों में कद्दूवर्गीय सब्जियों द्वारा हमारी सब्जियों की मांग पूरी होती है। इस वर्ग की सब्जियां गर्मी में काफी मात्रा में पैदा होती हैं। रबी की

फसलों की कटाई के बाद खेत खाली ही रहता है। अतः किसानों द्वारा भी गर्मियों के दिनों में कद्दूवर्गीय सब्जियों को अपने खेत में उगाने से खेतों का सदुपयोग होकर इसकी उचित सार-संभाल भी हो जाती है। अन्य सब्जियां इन दिनों उपलब्ध नहीं होने के कारण बाजार में बढ़िया भाव मिल जाता है।

| कद्दूवर्गीय सब्जी | औषधीय गुण | विभिन्न प्रसंस्कृत उत्पाद |
|-------------------|--|---|
| लौकी | यह एक बहुउपयोगी सब्जी है। यह तासीर में ठंडी होती है, इसलिए इस सब्जी को ग्रीष्म ऋतु में प्राथमिकता दी जाती है। यह कब्ज रोकती है, दस्तावर है तथा शीघ्र पचती है। | विभिन्न मिठाइयां जैसे बर्फी, हलवा |
| कद्दू | यह एक बहुउपयोगी सब्जी है। यह तासीर में ठंडी होती है। नियमित रूप से सब्जी खाने पर मूत्र विकारों में फायदा पहुंचता है। सब्जी दस्तावर तथा पाचक होती है। | ज्यूस, कैंडी, आचार, पाउडर, मिठाई(पेटा) आदि |
| खीरा | यह एक बहुउपयोगी सब्जी है। नियमित रूप से सब्जी खाने पर मूत्र विकारों में फायदा पहुंचता है। यह पेट के कीड़ों को मारकर बाहर निकालने में हितकारी है। फलों का रस मधुमेह जैसी बीमारियों के लिए लाभकारी है। | — |
| ककड़ी | यह ग्रीष्मकाल में शरीर को ठंडक पहुंचाती है। नमक के साथ कच्ची खाने से पेट विकारों व मूत्र विकारों में फायदेमंद है। | बीजों की ठंडे व शर्बत |
| काचरी एवं फूट | इसको खाने से पेट के विकारों में काफी लाभ होता है। इससे हड्डियों की गांठों में होने वाला दर्द कम हो जाता है। कच्चे फल खाने से मलेरिया नहीं होता है। | काचरी का चूर्ण, पंचकुटा सब्जी, आचार, चटनी, खटाई आदि |

शेष पेज 7 पर.....

* कृषि विज्ञान केन्द्र, चांदगोठी, चूरू

पेज 1 का शेष

इस्तेमाल करें।

3. छींकते और खांसते समय अपनी नाक और मुंह को रुमाल या टिशू से ढके। उपयोग करने के बाद टिशू को तुरन्त बन्द कचरे के डिब्बे में फेंके।

4. बातचीत के दौरान व्यक्तियों से एक सुरक्षित दूरी बनाए रखें, विशेष रूप से पलू जैसे लक्षण दिखने वाले के साथ।

5. अपनी बाहों के हिस्से में छींके, अपने हथेलियों में न खासें ना ही छींके।

6. अपने तापमान और सांस / श्वसन लक्षणों की जांच नियमित रूप से करें। अस्वस्थ होने पर डॉक्टर से जांच कराएं।

7. नाक व मुंह को ढकने के लिए मास्क का प्रयोग अवश्य करें।

8. खांसने-छींकने वालों से कम से कम 1 मीटर की दूरी बनाए रखें।

आमतौर से बुजुर्ग, गर्भवती महिलाओं और बच्चों को संक्रमण काफी तेजी से होता है क्योंकि इनकी बीमारी से लड़ने की ताकत या (रोग-प्रतिरोधक क्षमता) कमजोर होती है।

कैसे करें बचाव –

1. बुजुर्गों को खाने में हरी सब्जियां दें। साथ ही पर्याप्त मात्रा में पानी पिलाएं। इसके अलावा घर से बाहर ना जाने

दे तथा नियमित व्यायाम कराएं।

2. गर्भवती महिलाएं भीड़ भाड़ वाले इलाकों से दूर रहें, सार्वजनिक परिवहन जैसे बस, ट्रेन में सफर न करें। साथ ही ताजा सब्जियां तथा ताजा खाना खायें। दोस्तों और रिश्तेदारों से दूरी बनाए रखें।

3. बच्चों को डराए नहीं बल्कि समझाएं। साफ रहने तथा बार-बार हाथ धोने के लिए बताएं। ताजा भोजन कराएं। घर को कीटाणु-नाशक से साफ करें और उनके साथ घर में ही खेलें, बाहर न जाने दें।

रोगों से ग्रसित मरीजों की ज्यादा से ज्यादा देखभाल की जरूरत है।

किन-किन बातों का ध्यान रखें :

– हाथ ना मिलाएं।

– सर्दी, खांसी या बुखार जैसे लक्षण महसूस हो तो किसी अन्य निकटवर्ती के सम्पर्क में ना आएं।

– अपनी आंख, नाक व मुंह को स्पर्श ना करें।

– संक्रमण के लक्षण महसूस हो या अन्य किसी व्यक्ति के संक्रमित होने का पता चले तो तुरन्त टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें।

केन्द्र सरकार हेल्प डेस्क नम्बर – 9013151515

+91-11-23978046 या

1075

राजस्थान हेल्पलाइन नम्बर 0141-2225624

– सार्वजनिक स्थल पर ना थूकें।

– अनावश्यक यात्रा ना करें, विशेष कर प्रभावित इलाकों में समूह में ना बैठे, बड़े समारोहों में भाग ना लें।

– जहां तक सम्भव हो डिजिटल पेमेंट करें।

– अफवाहों और दहशत से बचें।

– कोरोना वायरस से बचने के लिए कोई दवा या वेक्सीन बाजार में नहीं जाए इसलिए इससे बचने के लिए खुद की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाना ही एक मात्र बचाव है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के तरीके

आयुष मंत्रालय के टिप्स अपनाएं। जिनमें से नियमित रूप से गरम पानी पीना, योगासन और प्रणायाम करना, च्यवनप्राश का सेवन, तुलसी, दालचीनी, काली मिर्च, सोंठ और मुलेठी का काढ़ा बना कर पीना, हल्दी मिला दूध पीना आदि का पूर्ण रूप से पालन करना चाहिए।

आयुर्वेद के कुछ उपाय जैसे कि :

– नियमित रूप से आंवला, ग्वारपाठा, गिलोय, नींबू का ज्यूस पीयें।

– पानी में तुलसी का रस

डालकर पीयें।

– चाय में लौंग, काली मिर्च, दाल चीनी और अदरक डालकर पीए।

– वातावरण को स्वच्छ रखने के लिए नीम की सूखी पत्तियों को कपूर के साथ जलाकर धुंआ करें।

आहार में सेवन करें :

– विटामिन डी युक्त खाद्य पदार्थ जैसे – दूध, दही, संतरा, नींबू, दलिया का सेवन करें।

– विटामिन सी युक्त पदार्थ जैसे अमरुद, संतरा, पपीता, शिमला मिर्च का सेवन करें।

– खाने में अधिक मात्रा में लहसून और हल्दी का प्रयोग करें।

– मुलेठी का सेवन करें।

– मांस, मछली के सेवन से बचें।

– शराब व धूम्रपान न करें।

– कोरोना वायरस संक्रमण से बचे रहने के लिए न सिर्फ साफ-सफाई अपितु खान-पान व शारीरिक व्यायाम व योगा जैसी

आदतों को भी अपनाना पड़ेगा क्योंकि हमारे शरीर की बीमारी के लड़ने की

ताकत जितनी मजबूतर होगी, हम इन बीमारी से

उतना ही बच रहेंगे। अतः करोना के डरे नहीं, सावधानी रखें तथा करोना वायरस को

हरायें।



इंटरनेट : किसानों के लिए भी उपयोगी

रेखा रतन*, कोमल कथूरिया**

इंटरनेट का आविष्कार संभव बनाने में मोबाइल कृषि से जुड़े किसी भी विषय सूचना तकनीकी की राह में मील का पत्थर साबित हुआ है जो कि सभी क्षेत्रों में काम करने के तरीकों में बड़ा बदलाव लाया है। इंटरनेट तक हर व्यक्ति की पहुंच को

उपयोगी हो सकती है : www.farmer.gov.in इस वेबसाइट को किसानों की हर प्रकार की समस्या को एक ही प्लेटफॉर्म पर सुलझाने के हिसाब से

शेष पेज 12 पर

शेष पेज 5 का.....

| | | |
|--------------------------------|---|-------------------------------|
| करेला | यह एक बहुउपयोगी सब्जी है। यह मधुमेह के रोगियों के लिए लाभकारी है। यह सब्जी टॉनिक का कार्य करती है तथा पेट साफ करती है। इसके फल, बीज तथा पत्तियों का उपयोग पेट के कीड़े नष्ट करने में किया जाता है। करेला कड़वा, शीतल, पाचक, कृमिनाशक, ज्वरनाशक होता है। यह बवासीर, पीलिया, मधुमेह, ब्रांकाइटिस तथा पेट के रोगों में लाभदायक है। | आचार, ज्यूस, पाउडर, चिप्स आदि |
| तुरई | एक सुपाच्य तरकारी मानी जाती है। इसके प्रयोग से पेट के विकार दूर होते हैं। | — |
| चप्पनकहू, कुंदरू परवल, चिंचीडा | इनकी सब्जी शक्तिवर्धक होती है। पेट दर्द व मूत्र विकारों में लाभदायक है। | — |
| खरबूजा | खरबूजे का गुदा व रस मूत्राशय के रोगों के लिए लाभकारी है और ताप कम करने का कार्य करता है। इसके रस में यदि जीरा व चीनी डालकर ग्रीष्मकाल में प्रयोग किया जाए तो वह शरीर को शीतल रखता है। ग्रीष्मकाल में इसके फल खाने से प्यास कम लगती है और लू का प्रभाव कम होता है। खरबूजे की गिरी में 40 से 44 प्रतिशत तेल पाया जाता है जिसका उपयोग सूखे मेवे के प्रतिस्थाई के रूप में किया जाता है। | ठंडाई, मिठाई, शर्बत और औषधि |
| तरबूजा | तरबूज के गुदे एवं रस को नमक व काली मिर्च डालकर सेवन करने से ग्रीष्मकाल में ठंडक मिलती है तथा प्यास भी कम लगती है। इसके बीजों की गिरी में 30 से 40 प्रतिशत तेल होता है और इनका प्रयोग ठंडे व शर्बत बनाने में किया जाता है। | ठंडाई, मिठाई, शर्बत और औषधि |

अगस्त माह के कृषि कार्य

डॉ. पी.एस. शेखावत, अनुसंधान निदेशक
स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

अमेरिकन कपास :

सिंचाई :-सिंचाई 20-25

दिन के अन्तर पर करें। पानी की कमी होने पर सिंचाई एक माह के अन्तर पर भी कर सकते हैं। हाईब्रिड नरमा में बूंद-बूंद सिंचाई पद्धति से सिफारिश किये गये नत्रजन तथा पोटाश तथा फास्फोरस की मात्रा 6 बराबर भागों में दो सप्ताह के अन्तराल पर ड्रिप संयंत्र द्वारा देने से सतही सिंचाई की तुलना में ज्यादा उपयुक्त पायी गयी। सिंचाई जल निम्न सारिणी के अनुसार एक दिन के अन्तराल पर बुवाई के दिन बाद से शुरू कर दें। वर्षा होने पर वर्षा की मात्रा के अनुसार सिंचाई उचित समय के लिये बन्द कर दें। पानी एक दिन के अन्तराल पर लगावें।

निराई-गुडाई :- सिंचाई के बाद बत्तर आने पर त्रिफाली चला कर निराई-गुडाई करें तथा खेत में खरपतवार न पनपने दें।

देशी कपास :

सिंचाई :-25-30 दिन के अन्तर पर सिंचाई करें।

धान

सिंचाई :-धान में कुल 125 से.मी. के लगभग सिंचाई के पानी की आवश्यकता होती है।

धान की रोपाई के बाद खेत में 4 से 5 से.मी. पानी खड़ा रहे, इसलिए समय-समय पर सिंचाई करते रहना चाहिए। फसल में बालियाँ निकलने से समय से लेकर दाना पड़ने तक खेत में पानी भरा रहना चाहिए। इन अवस्थाओं में पानी की कमी से उपज में कमी आ जाती है।

उर्वरक :-10 किलो नत्रजन प्रति बीघा (22 किलो यूरिया) रोपाई के 3 से 4 सप्ताह बाद तथा 10 किलो नत्रजन प्रति बीघा (22 किलो यूरिया) 6 से 7 सप्ताह बाद खड़ी फसल में टॉप ड्रेसिंग करें।

गन्ना:-

सिंचाई :-वर्षा न होने की स्थिति में **10-15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई** करें।

गन्ने में बून्द-बून्द सिंचाई:-बुवाई के एक महीने बाद बून्द-बून्द सिंचाई शुरू कर दें। वर्षा होने पर वर्षा की मात्रा के आधार पर बून्द-बून्द सिंचाई बन्द कर दें। सिंचाई जल निम्न सारिणी के अनुसार एक दिन के अन्तराल पर लगावें।

बून्द-बून्द सिंचाई पद्धति द्वारा ही नत्रजन एवं पोटाश उर्वरक दे। 40 किलोग्राम फास्फेट प्रति हैक्टर

बुवाई के समय कूड़ में दें। बून्द-बून्द सिंचाई द्वारा उर्वरक सिंचन (फर्टीगेशन) के लिए सिफारिश की गई नत्रजन एवं पोटाश की 75 प्रतिशत मात्रा पर्याप्त है। 112.5 किलोग्राम नत्रजन एवं 30 किलोग्राम पोटाश प्रति हैक्टर को 9 बराबर भागों में 3 सप्ताह के अन्तराल पर बून्द-बून्द सिंचाई पद्धति द्वारा फसल को दें।

निराई-गुडाई :- गन्ने में जड़ों के आस-पास मिट्टी चढ़ा देनी चाहिये।

मूंगफली :

सिंचाई :-दूसरी सिंचाई अगस्त के प्रथम पखवाड़े में करें। फूल आने पर, सुईयाँ बनने तथा फली के बनने के समय भूमि में नमी का होना आवश्यक है।

फव्वारा सिंचाई

मूंगफली की फसल में फव्वारा सिंचाई विधि से सिंचाई हेतु नोजल से नोजल की दूरी 12 मीटर तथा लाईन से लाईन की दूरी 12 मीटर पर रखकर 2.5 किग्रा प्रति वर्ग से. मी. पानी के दबाव पर सिंचाई करें। इस फसल में 60 मिमी. प्रति सिंचाई पानी लगाने पर 5 सिंचाईयाँ (बुवाई के 24, 48, 70, 91 एवं 112 दिन बाद)

उपयुक्त पाई गयी तथा 50 मिमी प्रति सिंचाई पानी लगाने पर 7 सिंचाईयाँ (बुवाई के 25, 40, 54, 68, 82, 95 एवं 108 दिन बाद) उपयुक्त पाई गयी।

निराई-गुडाई :- आवश्यकता हो तो दूसरी निराई गुडाई यथा शीघ्र पूरी कर दें।

खरपतवार नियंत्रण

रेतीली मृदाओं में जहां मूंगफली में भूरट खरपतवार की समस्या हो, वहां पेन्डीमेथालीन (30 ई. सी.) की 175 ग्राम मात्रा का प्रयोग बुवाई के दो दिन बाद। या खरपतवार नियंत्रण के लिए इमेजाथाइपर (10:1:1) दवा की 10 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति बीघा की दर से 100 से 125 लीटर पानी में डालकर बुवाई के 30-35 दिन बाद छिड़काव करें। जिस खेत में यह रसायन प्रयोग में लाया गया है वहां सरसों की अंकुरण क्षमता प्रभावित हो सकती है। इसके बाद सरसों की बुवाई अगर करनी हो तो बीज की मात्रा ज्यादा डालें।

ग्वार :-

सिंचाई :-बोने के तीन या चार सप्ताह बाद अच्छी वर्षा न हो तो सिंचाई करनी चाहिए। दूसरी सिंचाई वर्षा समाप्त होने शेष पेज 9 पर.....

शेष पेज 8 का.....

पर माह अगस्त या सितम्बर में करना आवश्यक है। यदि ग्वार के बाद रबी की फसल लेनी हो तो 15 सितम्बर के बाद सिंचाई नहीं करें, क्योंकि इसके बाद सिंचाई करने में फसल पकने में विलम्ब हो जाता है।

निराई-गुड़ाई :- यदि खेत में खरपतवार हो तो निराई-गुड़ाई करना आवश्यक है। यह क्रिया फसल की एक माह की अवस्था से पूर्व सम्पन्न कर देना चाहिए। खरपतवार नियंत्रण के लिए इमेजाथाइपर 10% SL दवा की 10 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति बीघा की दर से 100 से 125 लीटर पानी में डालकर बुवाई के 30-35 दिन बाद छिड़काव करें।

बाजरा :-

उर्वरक :- बुवाई के 25-30 दिन बाद, वर्षा वाले दिन या सिंचाई होने पर नत्रजन की आधी मात्रा दें। अगर इस समय वर्षा या सिंचाई न हो तो उर्वरक न दें।

निराई-गुड़ाई :- पहली निराई-गुड़ाई जब फसल 3 से 4 सप्ताह की हो जाये तब हल चलाकर करें।

तिल :-

सिंचाई :- यदि वर्षा न हो तो बुवाई के 25-30 दिन बाद सिंचाई करें।

उर्वरक :- 5 से 6 किलो यूरिया प्रति बीघा बुवाई के 30 दिन बाद खड़ी फसल में छिड़क कर दें।

अरण्ड :-

सिंचाई :- प्रथम सिंचाई बुवाई के 40 दिन बाद वर्षा न होने पर दें।

उर्वरक :- नत्रजन की आधी मात्रा (11 किलो यूरिया) प्रथम सिंचाई पर दें।

मूंग / मोठ :-

सिंचाई :- यदि समय पर वर्षा न हो तो सिंचाई आवश्यक करें।

निराई-गुड़ाई :- फसल में आवश्यकतानुसार खरपतवार निकालते रहिये। 30 दिन की फसल

होने पर निराई - गुड़ाई अवश्य कर देनी चाहिए। मूंग में खरपतवार नियंत्रण के लिए फसल बुवाई के 25-30 दिन की अवस्था पर रासायनिक विधि से एसीफ्लुरफेन 24 एस. सी. (बलैजर) 500 ग्राम खरपतवारनाशी को 150 लीटर पानी प्रति बीघा की दर से एक समान छिड़काव करें। या इमेजाथाइपर 10% SL दवा की 10 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति बीघा की दर से 100 से 125 लीटर पानी में डालकर बुवाई के 30-35 दिन बाद छिड़काव करें।

उद्यान

फलो में :

पौध रोपण : अगस्त माह में प्रायः एक - दो अच्छी बारिश होती है तथा वातावरण में नमी की मात्रा काफी होती है, यह समय फलवृक्ष जैसे किन्नु, माल्टा, अमरुद आदि लगाने का उत्तम समय है। परन्तु ध्यान रहे कि फल पौध उत्तम दर्जे की हों। पौधों को निर्धारित स्थान पर उतना ही गाड़े जितना वे नर्सरी में थे। पौधों की देख - रेख अच्छी प्रकार से करें। मूलवृन्त पर आये फुटान को हटा दें तथा पौधों को सीधा रखने के लिए बनछटी का प्रयोग करें। नियमित सिंचाई करें। किन्तु पौधों के पास अधिक पानी न लगने दें।

खजूर :

इस माह में खजूर के फल पकने लगते हैं। अतः इन फलों की तुड़ाई का कार्य किया जाता है। चूंकि वर्षा प्रारंभ होने के कारण खजूर पूरी तरह से नहीं पक पाते हैं, अतः उन्हें डोका अथवा प्रारंभिक डांग अवस्था पर तोड़ लेना चाहिए। वातावरण में नमी के कारण तोड़े हुये फलों में फफूंद लगने की आशंका रहती है। अतः उन्हें शीघ्र अतिशीघ्र प्रसंस्करण के लिए ले जाना चाहिए। नए

बाग लगाने हेतु भी यह समय उपयुक्त रहता है। बाग लगाने हेतु स्वस्थ एवं व्याधि रहित प्रशाखा का चुनाव करें।

.गोभी वर्गीय सब्जियों

फूल गोभी :- किस्में फूलगोभी की पिछेती किस्मों जैसे पूसा स्नोबल, के-1, हिसार-1, सलेक्शन-7 एवं पूसा कातकी आदि की बुवाई करें। बोने का समय :- मध्य जुलाई से अगस्त के प्रथम सप्ताह तक, पौध रोपण :- अगस्त के मध्य से सितम्बर तक, बीज की मात्रा :- 500 से 600 ग्राम प्रति हैक्टर, संकर किस्म 350-400 ग्राम प्रति हैक्टर

पत्तागोभी :- पत्तागोभी की पूसा ड्रम हैड, संकर हाइब्रिड-10 आदि किस्मों की नर्सरी में बुवाई करें। इसकी बीज दर 375 ग्राम प्रति हैक्टेयर रखें। अगेती किस्मों की तैयार पौधों का खेत में 45X45 सेमी. की दूरी पर रोपण करें।

सब्जियों में टमाटर, बैंगन, मिर्च, प्याज, गोभी आदि की पौध की रोपाई भी इसी समय की जानी है। इसके लिये 6 इंच बड़ी स्वस्थ पौध का चयन करें।

शेष पेज 10 पर.....

शेष पेज 9 का.....

पौध रोग रहित होनी चाहिये। पत्तियों की नसें यदि फूली हुई हैं तो ये वायरस से संक्रमित हो सकती हैं। इसलिये इनकी रोपाई नहीं करें। पौध को रोपाई से पहले ट्राइकोडर्मा से उपचारित जरूर करें। 5 लीटर पानी 100 ग्राम ट्राइकोडर्मा घोलें। इस घोल में पौध की जड़ों को आधा घंटे तक डुबोये। इसके बाद खेत में रोपाई करें।

कीट नियंत्रण

अमेरिकन कपास :—इस माह फसल पर रस चूसने वाले कीट जैसे हरा तेला, सफेद मक्खी के प्रकोप की संभावना रहती है। साथ ही चितकबरी लट का भी प्रकोप हो सकता है। इसलिए किसान भाई प्रतिदिन सुबह अपने खेत का निरीक्षण करें कि इन में से कोई कीट अपने आर्थिक नुकसान स्तर को पार नहीं कर गया।

देशी कपास :—देशी कपास में चितकबरी लट का प्रकोप हो सकता है इसके आर्थिक नुकसान स्तर को खेत में फेरोमेन ट्रेप लगाकर मालूम किया जा सकता है। आर्थिक नुकसान स्तर पार करने पर क्यूनालफॉस 20 ई.सी. 20

मिली प्रति लीटर या फेनवेलरेट 20 ई.सी. 1 मिली या इन्डोक्साकार्ब 1 मिली या स्पाइनोसैड 45 एस.सी. 0.33 मिली या इमामेक्टीन बैंजोएट 5 एस.जी. 0.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। कपास / नरमा की फसल को मिली बग के प्रकोप से बचाने हेतु खेत के आस-पास उगे खरपतवारों को नष्ट कर दें। यदि अधिक प्रकोप हो तो थायोडिकार्ब 75 डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम या प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. 2.00 मिली /लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर एक पुनः छिड़काव करें।

गन्ना :—गन्ने की फसल में तना छेदक का प्रकोप दिखाई देने पर फोरेट 10 जी.कण 4 किलो प्रति बीघा की दर से डाले। पाइरिला का प्रकोप होने पर मैलाथियान 50 ई.सी. 300 मिली या डाइमिथोएट 30 ई.सी. 250 मिली प्रति बीघा या थायोमैथोक्जाम 25 डब्ल्यू.जी. 0.50 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

ग्वार :—ग्वार की फसल में हरा तेला, सफेद मक्खी व चैंपा के प्रकोप से बचने के लिए डाइमिथोएट 30 ई.सी. एक

लीटर प्रति हैक्टर के हिसाब से या थायोमैथोक्जाम 25 डब्ल्यू.जी. 0.50 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर छिड़काव करें।

मूंग :— मूंग की फसल में मोयला, सफेद मक्खी व हरा तेले के प्रकोप के बचाव के लिए डाइमिथोएट 30 ई.सी. या ट्राइजोफॉस 40 ई.सी. का 250 मिली प्रति बीघा की दर से छिड़काव करें या मैलाथियान 5 प्रतिशत चुर्ण का 6 किलो बीघा की दर से भुरकाव करें। फली छेदक के नियन्त्रण के लिए क्यूनालफॉस 25 ई.सी. या मोनोक्रोटोफॉस 36 एस.एल. 250 मिली को प्रति बीघा की दर से छिड़काव करें।

बाजरा :—बाजरे की फसल में दीमक व सफेद लट के प्रकोप से बचने के लिए क्लोरोपाईरीफॉस 20 ई.सी. 4 लीटर प्रति हैक्टर की दर से सिंचाई के पानी के साथ देवें। कातरा के नियन्त्रण के लिए क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चुर्ण का 6 किलो बीघा की दर से भुरकाव करें या मोनोक्रोटोफॉस 36 एस.एल. एक लीटर दवा को 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।

तिल :—तिल की फसल में

पत्ती लपेटने वाली लट के नियंत्रण के लिए क्यूनालफॉस 25 ई.सी. या मोनोक्रोटोफॉस 36 एस.एल. एक लीटर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।

नींबू वर्गीय फल वृक्ष :—बागों में लीफ माईनर, पत्तियों को कुतर कर सुरंग बनाने वाले कीट का प्रकोप हो सकता है। इससे बचाव के लिए एसीटामिप्रिड 20 एस.पी. 0.40 मिली या ट्राइजोफॉस 40 ई.सी. 2.5 मिली या क्यूनालफॉस 25 ई.सी. 1.50 मिली या डयाफेन्थुरॉन 50 डब्ल्यू.पी. 2.0 ग्राम या थायोमैथोक्जाम 25 डब्ल्यू.जी. 0.50 मिली प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर छिड़काव करें।

सब्जियों में :

मिर्च :—सफेद मक्खी के प्रकोप को सीमित रखने के लिए नीमयुक्त कीटनाशी 5 मिली प्रति लीटर की दर से छिड़काव करे। या ट्राइजोफॉस 40 ई.सी. 2.0 मिली प्रति लीटर पानी में मिला कर छिड़कें।

बैंगन :—बग एवं फल छेदक के प्रकोप की संभावना रहती है इन्हें रोकने के लिए प्रति हैक्टर या मैलाथियान 50 ई.सी. 1.5

शेष पेज 10 का.....

लीटर प्रति हैक्टर की दर से डाइमथोएट 30 ई.सी. 2.0 मिली प्रति लीटर का छिड़काव करें।

रोग नियंत्रण

अमेरिकन कपास : शाकाणु—**झुलसा रोग** : रोग के प्रकोप को देखते हुए रोग नियंत्रण के लिए निम्न दवाओं का घोल 100 लीटर पानी की दर से बनाकर छिड़काव करें।

(अ) स्ट्रेप्टोसाइक्लिन - 5-10 ग्राम या प्लांटोमाइसिन - 50-100 ग्राम
आ) क ट ँ प र आक्सीक्लोराइड - 250-300 ग्राम

पत्ता मरोड़ रोग (लीफ कर्ल) :—पत्ता मरोड़ रोग का प्रकोप चल रहा है। रोग को फैलाने वाली सफेद मक्खियों के नियंत्रण के लिए सिफारिश की गई कीटनाशी दवाओं का छिड़काव करें। खेत व खेत के चारों ओर सड़क या कैनल के दोनों तरफ उपस्थित खरपतवारों (पीली बूटी, कंगी बूटी, भांग, भिण्डी, भाखड़ी आदि) को समय-समय पर साफ करते रहे।

देशी कपास : जड़गलन

—जड़गलन रोग से प्रभावित पौधों को जड़ सहित निकाल कर जला दें।

ऐसा करने से रोग आगे नहीं बढ़ेगा।

मूंगफली : टिक्का रोग : पत्तियों पर भूरे-काले धब्बे दिखाई पड़ने पर कार्बोन्डिजिम 50 डब्ल्यू.पी. 0.1 प्रतिशत अथवा मैन्कोजेब 0.2 प्रतिशत अथवा हैक्जाकोनाजोल 5ई.सी. 1 मिली प्रति लीटर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

कॉलर रोट : खड़ी फसल में सन्धि विगलन रोग (कॉलर रोट): रोकथाम के लिए प्रोपीकोनाजाल (25 ईसी) या हेक्जाकोनाजोल (5 ईसी) 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी का मृदा निक्षेप अथवा सिचाई पानी के साथ 200 मि.ली. प्रति बीघा की दर से देवें।

मूंग : शाकाणु चित्ती रोग : मूंग की वर्षाकाल में ली जाने वाली फसल में रोग के छोटे-छोटे गहरे भूरे रंग के धब्बे पत्तियों, फलियों एवं तनों आदि पर दिखाई पड़ने पर स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 5 ग्राम तथा कॉपर आक्सीक्लोराइड 300 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी के घोल बना कर प्रति बीघा की दर से छिड़काव करना चाहिए।

ग्वार : जीवाणु झुलसा रोग :

इस रोग की रोकथाम के लिये खड़ी फसल में 100 लीटर पानी में स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 20 ग्राम व कॉपर आक्सीक्लोराइड 50 डब्ल्यू पी 200 ग्राम के हिसाब से घोल बनाकर 15 दिन के अन्तराल पर दो छिड़काव करें। झुलसा रोग की रोकथाम हेतु जाईनेब या मैन्कोजेब का 0.2 प्रतिशत का छिड़काव करें।

तिल : फिलोडी रोग : इस रोग के नियंत्रण के लिए थायोमिथोक्जाम 0.25 ग्राम प्रति लीटर की दर से प्रथम छिड़काव 45 दिन व दूसरा छिड़काव 60 दिन की फसल अवस्था पर करें एवं स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 150 पीपीएम तथा कॉपर आक्सीक्लोराइड 2 ग्राम प्रति लीटर की दर से तीसरा छिड़काव 70 दिन फसल अवस्था पर करें।

सब्जियां

विषाणु रोग : टमाटर में पर्ण कुंचन या मोजेक, बैंगन व मिर्च में छोटी पत्तियों का रोग व अन्य सब्जियों में मोजेक के लक्षण दिखाई पड़ते ही सफेद मक्खियों के नियंत्रण के लिए छिड़काव करें। भिन्डी में भी पीत शिरा मोजेक के लिए

सफेद मक्खी का नियंत्रण करें। रोगी पौधों को निकालकर जला दें।

फल

नींबू वर्गीय फल: सिट्रस कैंकर :यदि जुलाई में रोग नियंत्रण के लिए छिड़काव नहीं किया गया है तो अगस्त में करें। यह माह रोग के फैलने के लिए अनुकूल है। नियंत्रण के लिए स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 100 मिली. (100 पी पी एम) एवं कॉपर आक्सीक्लोराइड 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। अथवा सूडोमोनास फल्यूरोसेन्स जैविक उत्पाद की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

फलों का गिरना :—किनू में रोगों (स्टेम एन्ड रोट / तड़ान्त सड़न आदि) एवं अन्य कारणों (जलवायु सम्बन्धी) से फलों को गिरने से रोकने हेतु कार्बोन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी (बाविस्टीन) 1 ग्राम प्रति लीटर पानी या प्रोपीनेब 70 डब्ल्यूपी (एन्ट्राकोल) 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें। प्रयोग किये जाने वाले घोल में जिब्रेलिक एसिड 20 मिली. ग्राम प्रति लीटर की दर से मिलावें।



निदेशक की कलम से

वर्तमान में पूरा विश्व, वैश्विक महामारी 'कोरोना' से त्रस्त है। इन विषम परिस्थितियों में सभी गतिविधियां ठप हैं, लेकिन इस चुनौतीपूर्ण दौर में भी कृषि कार्यों को नहीं टाला जा सकता है। कोरोना महामारी में लॉकडाउन के दौरान सभी गतिविधियों को रोक दिया गया, परंतु भोजन के बिना रहना असंभव था। ऐसे में हमारे किसान भाइयों ने दिन-रात मेहनत करके अन्न उत्पादन का कार्य किया, वह अद्वितीय है। इस पुनीत कार्य के लिए मैं हृदय से सभी किसान भाइयों को नमन करता हूँ।

साथ ही साथ मेरा दृढ़विश्वास है कि देश को संकट की इस घड़ी से उबारने में किसान भाइयों की अहम् भूमिका रहेगी अतः मैं सभी किसान भाइयों का आह्वान करता हूँ कि इस समय दोगुने जोश के साथ कार्य करें, जिससे हमारे देश में कोरोना के कारण हुई क्षति की भरपाई की जा सके।

मैं आशा करता हूँ कि मानसून सामान्य रहेगा पर इसके साथ-साथ अगर हम उन्नतशील बीज एवं नवीनतम तकनीकियां भी अपनाएंगे, तो निश्चित तौर पर हमें आशातीत लाभ मिलेगा। प्रसार शिक्षा निदेशालय एवं जिले में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र आपकी सेवा में सदैव तत्पर हैं।

धन्यवाद

— डॉ. एस. के. शर्मा

पेज 7 का शेष..... बनाया गया है। किसान इसमें दिए मैप की सहायता से अपने जिले, ब्लॉक/गाँव आदि को चुन कर वहाँ के आसपास की कृषि से संबंधित किसी भी प्रकार की जानकारी ले सकते हैं।

2. Expert System on Wheat

आई.ए.एस.आर.आई द्वारा विकसित इस वेबसाइट पर गेहूँ की खेती के बारे में सभी प्रकार की जानकारी, क्षेत्र विशेष की मिट्टी व जलवायवीय परिस्थितियों के

हिसाब से जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। यह किसानों को अपने खेत में गेहूँ की बीमारियों और कीटों को जानकर समुचित उपचार के बारे में भी बताती है। इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर भी ऑनलाइन दिए जाते हैं। इसी प्रकार के एक्सपर्ट सिस्टम मक्का, मसालों और मशरूम की खेती पर भी बनाये गए हैं।

3. www.agmarket.gov.in

इस वेबसाइट पर कृषि उत्पादों के देश की विभिन्न मंडियों में चल रहे भावों पर

नजर रखी जा सकती है जिससे कि किसान देश में कहीं भी अपने उत्पाद का सर्वोत्तम भाव प्राप्त कर सकें।

4. www.isapindia.org

यह इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीबिजनेस प्रोफेशनल्स द्वारा विकसित की गयी है, यहाँ पर किसानों को शहरी और ग्रामीण अंचलों में आय के अंतर पर समझाया जाता है। किसान इस सोसाइटी के सदस्य बन कर अपने उत्पादों का ऑनलाइन व्यापार कर सकते हैं।

5. www.kisanmarket.

com तथा www.bestkisan.com

इन वेबसाइट्स पर भी किसान बिचौलियों की मदद के बिना अपने उत्पादों की अच्छी कीमतों पर ऑनलाइन बिक्री कर सकते हैं।

6. http://agricoop.nic.in

यह भारत सरकार के कृषि मंत्रालय की वेबसाइट है, इस पर भारत सरकार की किसानों के लिये बनायी गयी सभी योजनाओं की प्रमाणिक जानकारी उपलब्ध है, अतः किसान किसी भी प्रकार का संदेह निवारण इस वेबसाइट के माध्यम से कर सकते हैं।



* विद्यावाचस्पति छात्र पीएच्यू, लुधियाना, **सहायक आचार्य, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर